1 SEP 2019

ESSAY

निर्धारित समय: तीन घंटे
Time allowed: Three Hours

DTVF/19(JS)–ESY-E4

अधिकतम अंक: 250
Maximum Marks: 250

Name: Girdhari lal Meena **Mobile Number:** _____

Medium (English/Hindi): Hindi **Reg. Number:** AWAKE-19/E017

Center & Date: 1/09/2019, Delhi **UPSC Roll No.** *(If allotted)*: 0856006

प्रश्नपत्र संबंधी विशेष अनुदेश

(प्रश्नों के उत्तर देने से पहले निम्नलिखित प्रत्येक अनुदेश को कृपया ध्यानपूर्वक पढ़ें)

प्रवेश-पत्र में प्राधिकृत माध्यम में निबंध लिखना आवश्यक है तथा इस माध्यम का स्पष्ट उल्लेख प्रश्न-सह-उत्तर (क्यू. सी. ए.) पुस्तिका के मुखपृष्ठ पर निर्दिष्ट स्थान पर करना आवश्यक है। प्राधिकृत माध्यम के अलावा अन्य माध्यम में लिखे गए उत्तरों को अंक नहीं दिये जाएंगे।

प्रश्नों के उत्तर निर्दिष्ट शब्द-संख्या के अनुसार होने चाहिये।

प्रश्न-सह-उत्तर पुस्तिका में खाली छोड़े गए किसी पृष्ठ अथवा पृष्ठ के भाग को पूर्णत: काट दीजिये।

QUESTION PAPER SPECIFIC INSTRUCTIONS

(Please read each of the following instructions carefully before attempting questions)

The ESSAY must be written in the medium authorized in the Admission Certificate which must be stated clearly on the cover of this Question-cum-Answer (QCA) Booklet in the space provided. No marks will be given for answers written in medium other than the authorized one.

Word limit, as specified, should be adhered to.

Any page or portion of the page left blank in the Question-cum-Answer Booklet must be clearly struck off.

	निबंध विषय संख्या (Essay Topic No.)	अंक (Marks)
खंड–A Section-A		
खंड–B Section-B		
सकल योग (Grand Total)		

_____

मूल्यांकनकर्त्ता (हस्ताक्षर)
Evaluator (Signature)

_____

पुनरीक्षणकर्त्ता (हस्ताक्षर)
Reviewer (Signature)

Feedback

1. Context Proficiency (संदर्भ दक्षता)
2. Introduction Proficiency (परिचय दक्षता)
3. Content Proficiency (विषय-वस्तु दक्षता)
4. Language/Flow (भाषा/प्रवाह)
5. Conclusion Proficiency (निष्कर्ष दक्षता)
6. Presentation Proficiency (प्रस्तुति दक्षता)

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

drishti | दृष्टि The Vision

खंड A और B में प्रत्येक से एक विषय चुनकर दो निबंध लिखिये, जो प्रत्येक लगभग 1000–1200 शब्दों का हो: $125 \times 2 = 250$

Write TWO Essays, choosing ONE from each of the Section A and B, in about 1000–1200 words each: $125 \times 2 = 250$

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

खंड–A / SECTION –A

1. सोशल मीडिया : सामाजिक कम व्यक्तिगत ज़्यादा।
   Social media : More personal than social.
2. भारत में सामाजिक सशक्तीकरण की प्रक्रिया में आरक्षण का योगदान तथा इसके विरोधाभास।
   The role of reservation in social empowerment in India: Contribution and Contradiction.
3. भूमंडलीकरण के दौर में संरक्षणवादी नीतियाँ अल्पकालिक हितों की पूर्ति से ज़्यादा कुछ नहीं है।
   Protectionist measures in the era of globalization are nothing more than the fulfilment of short-term interests.
4. जलवायु परिवर्तन : करे कोई भरे कोई।
   Climate Change : Done by someone and paid by someone else.

खंड–B / SECTION –B

1. एक सुखी जीवन प्रकृति से प्रेरित एवं सहजता से संचालित होता है।
   A good life is the one inspired by nature and conducted with ease.
2. व्यावहारिकता आदर्श की पुष्टि करती है।
   Pragmatism affirms the ideal.
3. मूल्यविहीन शिक्षा व्यक्ति को चतुर शैतान बनाती है।
   Education without values makes man a cleverer devil.
4. विकसित होते भारतीय समाज का द्वंद्व।
   Conflicts in developing Indian society.

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

खंड–A / SECTION –A

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

1. सोशल मीडिया : सामाजिक कम व्यक्तिगत ज़्यादा।

   Social media : More personal than social.

2. भारत में सामाजिक सशक्तीकरण की प्रक्रिया में आरक्षण का योगदान तथा इसके विरोधाभास।

   The role of reservation in social empowerment in India: Contribution and Contradiction.

3. भूमंडलीकरण के दौर में संरक्षणवादी नीतियाँ अल्पकालिक हितों की पूर्ति से ज़्यादा कुछ नहीं है।

   Protectionist measures in the era of globalization are nothing more than the fulfilment of short-term interests.

4. जलवायु परिवर्तन : करे कोई भरे कोई।

   Climate Change : Done by someone and paid by someone else.

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

drishti | दृष्टि The Vision

SECTION-A

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

(3) "भूमण्डलीकरण के दौर में संरक्षणवादी नीतियाँ अल्पकालिक हितों की पूर्ति से ज्यादा कुछ नहीं हैं।"

"आज हम अखबारों में ब्रेक्जिट, अमेरिका फर्स्ट, शरणार्थियों को लेकर विवाद, वीजा नीति में परिवर्तन तथा जलवायु परिवर्तन के विरुद्ध सहयोग आधारित भागीदारी में निरंतर कमी की खबरें पढ़ते हैं।"

वर्तमान में संरक्षणवादी "नैं" की नीति प्रभावी हो रही है। विकसित देशों द्वारा अंतर्राष्ट्रीय दायित्व से स्वयं को पीछे खींचा जा रहा है। कुछ समय पूर्व जो वैश्वीकरण, लगता था कि जीवन का आवश्यक अंग बन गया है, स्वयं खुद के जीवन को नहीं सम्भाल पा रहा है। वैश्वीकरण के सम्मुख संरक्षणवादी नीतियों के कारण रोज नये संकट सामने आ रहे हैं। इसी कारण आज कहा जा रहा है कि वैश्वीकरण के दिन लद गए और मानव की अल्पकालिक व दीर्घकालिक आवश्यकताओं की पूर्ति संरक्षणवाद द्वारा की जा सकती है। इसी विचार ने वैश्वीकरण एवं संरक्षणवाद के मध्य संघर्ष की स्थिति पैदा की है।

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

संरक्षणवाद एवं वैश्वीकरण के लाभों को जानने से पूर्व यह जानना आवश्यक है कि संरक्षणवाद एवं वैश्वीकरण का तात्पर्य क्या है। वैश्वीकरण मानवीय सहयोग की विस्तृत विचारधारा है जिसके कारण एक प्रक्रिया के रूप में राजनीतिक, आर्थिक व पर्यावरणीय क्षेत्र में सहयोग किया जा रहा है। सुदूर भारत का व्यक्ति अमेरिकी ग्राहकों की शिकायतों का निपटान सूचना तकनीक के माध्यम से वैश्वीकरण के कारण कर पा रहा है। वैश्वीकरण के कारण संयुक्त राष्ट्र संघ का उदय हुआ।

दूसरी तरफ वैश्वीकरण के प्रतिशोध स्वरूप एक विचारधारा सामने आ रही है जिसे "संरक्षणवाद" कहा जा रहा है। संरक्षणवाद के कारण वैश्विक सहयोग की "हम" आधारित विचारधारा के बजाय "मैं" आधारित संकुचित प्रवृत्ति को बढ़ावा मिल रहा है। आज यूरोप, अमेरिका, ऑस्ट्रेलिया जैसे देश आंतरिक व बाह्य परिस्थितियों के कारण संरक्षणवाद की तरफ आगे बढ़ रहे हैं। इसी कारण संरक्षणवाद को हितों का संरक्षक मानकर "अमेरिका फर्स्ट" पर बल दिया जा रहा है। इस कारण अब चर्चा का अगला पक्ष यह है कि संरक्षणवाद

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

drishti | दृष्टि The Vision

इतनी तीव्रता से क्यों बढ़ रहा है।

संरक्षणवाद के विकास को भी वैश्वीकरण के विकास जितना पुराना माना जाना चाहिए और वर्तमान सोशल मीडिया के दौर में संरक्षणवाद की तीव्र अभिव्यक्ति हो रही है। बढ़ती जनसंख्या एवं संसाधनों की सीमितता के कारण भी संरक्षणवाद को बढ़ावा मिल रहा है। साथ ही वर्तमान मानव उपभोक्तावाद के कारण संसाधनों के संग्रहण पर अधिक बल दे रहा है। इसी कारण संरक्षणवाद संस्थागत रूप ले रहा है।

साथ ही राजनीतिक लाभ के लिए भी संरक्षणवाद को आगे बढ़ाया जा रहा है। सत्ता की प्राप्ति एवं खाड़ीवादी तत्वों को खुश करने के लिए ऐसा किया जा रहा है। वर्तमान मानवीय मूल्यों का दायरा सीमित होगया है जो संरक्षणवाद का कारण एवं परिणाम दोनों बन गए हैं। पर्यावरणीय उत्तरदायित्व में विकसित देशों की अधिक भूमिका के कारण भी संरक्षणवाद सामने आ रहा है। इसी कारण अमेरिका पेरिस जलवायु परिवर्तन संबंधी समझौते से बाहर हो गया। वैश्वीकरण के नकारात्मक परिणामों द्वारा भी संरक्षणवाद को बढ़ावा दिया जा रहा है। वैश्वीकरण के लाभ भी सीमित

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

drishti | दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

व किसी विशेष वर्ग तक संकुचित थे। इस कारण संरक्षणवादी विचारधारा सामने आयी।

अब चर्चा का अगला पक्ष यह है कि संरक्षणवाद अल्पकालिक हितों की पूर्ति कैसे कर सकता है। संरक्षणवाद के कारण रोजगार पर उसी देश के नागरिकों का अधिकार बनाकर असंतोष को कम किया जा सकता है। संरक्षणवाद के कारण वैश्विक शरणार्थियों के उत्तरदायित्व से बचा जा सकेगा। साथ ही देश के संसाधनों का उपयोग देश के लोगों द्वारा देश के हित में किया जायेगा। इसी कारण अमेरिका अपनी बीजा नीति के कारण विदेशियों को अमेरिका आने से हतोत्साहित कर रहा है।

संरक्षणवाद के कारण वैश्विक पर्यावरण संरक्षण के उत्तरदायित्व से मुक्ति मिलेगी। इसी कारण अमेरिका संयुक्त राष्ट्र व विभिन्न राजनीतिक समझौतों के माध्यम से अपनी भूमिका को कम कर रहा है। अफगानिस्तान व सीरिया से अमेरिकी फौजों की वापसी से अमेरिका पर आर्थिक दबाव कम होगा तथा अमेरिका में आंतरिक असंतोष को कम कर सकता है। विश्व व्यापार युद्ध वास्तव में संरक्षणवाद का ही एक रूप है। इसके कारण अमेरिका अपने

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

drishti | दृष्टि The Vision

व्यापारिक घाटे को कम कर स्वयं के उद्योगों को संरक्षण प्रदान कर सकता है। अमेरिका व पश्चिमी देशों का मानना है कि आतंकवाद व वैश्विक अन्य समस्याओं से बचने के लिए स्वयं के हितों का संरक्षण आवश्यक है।

संरक्षणवाद के कारण सांस्कृतिक साम्राज्यवाद पर नियंत्रण किया जा सकेगा तो किसी विशेष देश द्वारा स्वयं की ~~संस्कृति~~ संस्कृति को संरक्षित रखा जा सकता है। मुस्लिम धर्म, गरीबी व अन्य विचारधाराओं के प्रसार को रोकने के लिए संरक्षणवाद को आगे लाया जा रहा है। तृतीय विश्व के देशों के अनुसार संरक्षणवाद के कारण "ब्रेन-ड्रेन" पर नियंत्रण किया जा सकेगा। इस कारण स्वयं के बौद्धिक संसाधनों का स्वयं के हितों की पूर्ति के लिए प्रयोग किया जा सकेगा।

इस तरह देखे तो संरक्षणवाद के अल्पकालिक हित राजनीतिक, पर्यावरणीय, सामाजिक, सांस्कृतिक तथा आर्थिक स्वरूप से युक्त है। इन्हीं अल्पकालिक हितों के कारण अमेरिका संरक्षणवाद का ध्वजवाहक बना हुआ है। इसी संरक्षणवाद के कारण विश्व के सम्मुख विभिन्न समस्याएं सामने आयी है तथा इन समस्याओं की अभिव्यक्ति

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

आंतरिक व बाह्य संघर्ष के रूप में होती है।

संरक्षणवाद दीर्घकालिक हितों की पूर्ति नहीं कर सकता तथा दीर्घकालिक हितों की पूर्ति के लिए वैश्वीकरण की आवश्यकता है। संयुक्त राष्ट्र महासचिव के अनुसार "संरक्षणवाद एक संकुचित प्रवृत्ति है जो वास्तव में समस्याओं को कम करने के बजाय उनको और अधिक विकराल बना देगी।" दीर्घकालिक हित तो "मानवीय सहयोग" में आधारित है तथा मानवीय सहयोग के लिए वैश्वीकरण की आवश्यकता है न कि संरक्षणवाद की। मानवीय सहयोग के कारण ही अफ्रीका विकास कर रहा है इसी कारण असंतोष में निरंतर कमी आ रही है।

मानवीय सहयोग के कारण ही अल्बर्ट आइंस्टीन का अमेरिका में उदय हुआ। अल्बर्ट आइंस्टीन के अनुसार "संकुचित राष्ट्रवाद आधारित प्रवृत्तियों के कारण मानव के सोचने का दायरा भी सीमित हो जाता है तथा समाज में वैज्ञानिकता का विकास नहीं हो पाता।" दीर्घकालिक हित तो वर्तमान जलवायु परिवर्तन की समस्या का समाधान करना है तथा इस समस्या के समाधान के लिए संरक्षणवाद के बजाय संयुक्त राष्ट्र संघ के माध्यम

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

से वैश्विक सहयोग की आवश्यकता है।

राजनीतिक स्थायित्व व प्रशासनिक सुधार के लिए भी संरक्षणवाद प्रभावी नहीं है।माना जाता है कि विश्व में कही भी असंतोष सम्पूर्ण मानव समुदाय के लिए हानिकारक है। इस कारण अफगानिस्तान, सीरिया व अफ्रीका में स्थायित्व सुनिश्चित करने के लिए वैश्वीकरण की आवश्यकता है। प्रशासनिक क्षेत्र में व्याप्त समस्याओं के समाधान के लिए वैश्विक प्रक्रियाओं को अपनाने की आवश्यकता है जो वैश्वीकरण के माध्यम से ही सम्भव है न कि संरक्षणवाद के द्वारा।

आर्थिक सहयोग तथा 2030 तक 'सतत व समावेशी विकास' के दीर्घकालिक लक्ष्यों की पूर्ति भी वैश्वीकरण के माध्यम से ही सम्भव है। विकसित देशों के सहयोग के बिना यूनेस्को, यूनिसेफ व विश्व व्यापार संगठन व विश्व स्वास्थ्य संगठन उचित रीति से कार्य नहीं कर सकेगें। इस कारण गरीबी व भूखमरी पर विजय प्राप्त करने के लिए वैश्वीकरण द्वारा दीर्घकालिक हितों की पूर्ति करने की आवश्यकता है।

वैश्वीकरण रूढ़िवाद तथा धार्मिक कट्टरतावाद पर नियंत्रण लगाकर वैश्विक सहयोग,

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

drishti | दृष्टि The Vision

समानुभूति के मूल्यों को बढ़ावा देगा। इस आधार पर वैश्वीकरण पाश्चिमी एशिया व मध्य पूर्व की शांति व स्थायित्व के लिए आवश्यक है। वैश्वीकरण के आधार पर समाजीकरण की प्रक्रिया को वैज्ञानिक बनाया जा सकेगा तथा इस आधार पर प्रबोधन आधारित तार्किकता की चेतना से युक्त "स्मार्ट नागरिक" का उदय होगा जो संरक्षणवाद के आधारपर सम्भव नहीं है।

दीर्घकालिक हित इसमें निहित है कि हम हमारी कमजोरियों व समस्याओं को निरंतर पहचान कर विकास करें। हमारे नैतिक मूल्य मानवता आधारित सहयोग पर आधारित होने चाहिए। संरक्षणवाद रूपी वैचारिक कमजोरी को दूर करने का प्रयास किया जाना चाहिए। पूर्व में भी संरक्षणवाद का उदय हुआ था। संरक्षणवाद के कारण प्रथम व द्वितीय विश्व युद्ध सामने आया तो 1929 में विश्व मंदी की स्थिति में आ गया था। इसी कारण मानव व विश्व के विकास के लिए वैश्वीकरण को आगे बढ़ाया गया था।

वैश्वीकरण के कारण ही प्राचीन काल में व्यापार की विकसित दशा विद्यमान थी तथा प्राचीन भारत में सभी विदेशियों को शामिल करने

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

drishti | दृष्टि The Vision

की भावना को लागू किया गया। इसी कारण वैश्वीकरण के सहयोग ने विश्व की कई समस्याओं का समाधान किया। इसी तरफ संरक्षणवाद के कारण निरंतर युद्ध की स्थिति बनी हुई है। अमेरिका व चीन आर्थिक व राजनीतिक मोर्चे पर संघर्ष कर रहे हैं। इसी कारण माना जा रहा है कि विश्व की समस्याओं एवं दीर्घकालिक हितों की पूर्ति के लिए वैश्वीकरण की आवश्यकता है न कि संरक्षणवाद की।

आवश्यकता इस बात की है कि वर्तमान संरक्षणवाद को वैश्वीकरण से दूर किया जाये। इसके लिए वैश्वीकरण को बढ़ाना आवश्यक है तो साथ में वैश्वीकरण के नकारात्मक परिणामों व समस्याओं का समाधान आवश्यक है। इसके लिए "अंतरराष्ट्रीय सहयोग" पर बल दिया जाना चाहिए तथा वैश्विक अभिशासन आधारित संस्थाओं की सक्रिय भागीदारी की आवश्यकता है। हमें हमारी शिक्षा व समाजीकरण की व्यवस्था में परिवर्तन के माध्यम से मानवीय सहयोग के मूल्यों का दायरा विस्तारित कर स्मार्ट नागरिक के निर्माण की आवश्यकता है। इस कार्य में सिविल सोसायटी

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

drishti | दृष्टि The Vision

का भी सक्रिय सहयोग लिया जाना चाहिए क्योंकि ये वैश्वीकरण के अग्रज हैं। संरक्षणवादी नीतियों के मूल कारणों की जानकारी प्राप्त कर एक दीर्घकालिक व विस्तारित समाधान की आवश्यकता है। व्यापार में बाधक कारकों पर ध्यान देकर राष्ट्रीय हितों के मध्य संतुलन स्थापित कर व्यापारिक सहयोग की आवश्यकता है। वैश्वीकरण के लिए पहले क्षेत्रीय सहयोग पर बल दिया जाना चाहिए क्योंकि क्षेत्रीयता के व्यापक स्वरूप ग्रहण करने के पश्चात ही वैश्वीकरण सामने आता है। विकसित देशों द्वारा विश्व में अपनी भूमिका को पुनः परिभाषित करने की आवश्यकता है।

निष्कर्षतः विश्व के दीर्घकालिक हितों की पूर्ति के लिए वैश्वीकरण की नितांत आवश्यकता है तथा इसके लिए बहुआयामी उपायों की आवश्यकता है। एक मानव से लेकर विभिन्न राष्ट्रों की समस्याओं का समाधान किया जाना चाहिए। सहयोग के वैश्विक मंचों का उपयोग इसके लिए किया जाना चाहिए। राष्ट्रों द्वारा अल्पकालिक व संकीर्ण हितों को त्यागकर मानवीय, नैतिक व वैश्विक हितों को वरीयता देना चाहिए। संरक्षणवाद तो केवल तीसरे विश्व युद्ध का ही कारण

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

बन सकता है। अतः सभ्यता के स्थायित्व व विकास के लिए हमें हमारी सोच व कार्यों के दायरे को विस्तार देना चाहिए।

"वैश्वीकरण एक चक्रिय प्रक्रिया है जो कुछ समय के लिए रुक सकती है लेकिन कभी वापस नहीं हो सकती क्योंकि यह विचारों के दीर्घकालिक व स्थायित्व आधारित स्वरूप से जुड़ी है।"

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

खंड–B / SECTION –B

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

1. एक सुखी जीवन प्रकृति से प्रेरित एवं सहजता से संचालित होता है।

   A good life is the one inspired by nature and conducted with ease.

2. व्यावहारिकता आदर्श की पुष्टि करती है।

   Pragmatism affirms the ideal.

3. मूल्यविहीन शिक्षा व्यक्ति को चतुर शैतान बनाती है।

   Education without values makes man a cleverer devil.

4. विकसित होते भारतीय समाज का द्वंद्व।

   Conflicts in developing Indian society.

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

SECTION-B

② "व्यावहारिकता आदर्श की पुष्टि करती है"

" भारत द्वारा अपनी विदेश नीति में राष्ट्रीय हितों के साथ-साथ पंचशील, गुजराल सिद्धांत व वैश्वीकरण के आदर्शों को पुष्ट करने के लिए व्यावहारिकता का समावेश किया है।"

हम जीवन में निरंतर सुनते है कि व्यक्ति व राष्ट्रों के द्वारा आदर्श के आधार पर कार्य किया जाना चाहिए। इसी कारण गाँधीजी तथा जवाहरलाल नेहरु के द्वारा आदर्श व यथार्थ में समन्वय की बात की। आदर्श व यथार्थ में समन्वय के कारण ही बुद्ध के मध्यमार्गीय विचार व्यावहारिकता का उदय होता है। व्यावहारिकता निरपेक्ष होने के बजाय सापेक्षवाद पर आधारित एक रणनीति है जो परिस्थितियों व हितों के आधार पर स्वयं में परिवर्तन की क्षमता रखती है। इसी कारण यथार्थवाद, आदर्शवाद तथा व्यावहारिकता के मध्य द्वन्द्व की स्थिति विद्यमान रहती है जो व्यक्ति के जीवन से लेकर वैश्विक सहयोग के पक्षों तक विस्तारित है।

व्यावहारिकता आदर्शवाद व

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

drishti | दृष्टि The Vision

यथार्थवाद के बीच की स्थिति है जो परिस्थितियों के आधार पर निर्णय लेने पर बल देती है। इसमें मानवतावाद, विश्व के हित शामिल होते हैं तो राष्ट्रीय हितों को भुनाया नहीं जाता। इसी कारण विभिन्न धर्मों व संस्कृतियों में व्यावहारिकतावाद आवश्यक अंग के रूप में देखा जा सकता है। महात्मा बुद्ध का अष्टांगिक मार्ग इसी व्यावहारिकतावाद पर आधारित है।

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

अब चर्चा का अगला पक्ष यह है कि "व्यावहारिकता आदर्श की पुष्टि करती है" तथा यह जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में देखा जा सकता है। राजनीतिक क्षेत्र के आदर्शों को देखें तो यह वैश्विक सहयोग, मानवीय समता, मौलिक अधिकारों व वैश्विक अभिशासन के रूप में विद्यमान है। इन आदर्शों को वर्तमान में व्यवहारिकतावाद द्वारा पूरा किया जा रहा है। वैश्विक स्तर पर सतत विकास लक्ष्यों के माध्यम से वैश्विक सहयोग की बात की जा रही है। भारत में एक व्यक्ति एक मत का सिद्धांत भी व्यावहारिकतावाद पर आधारित है।

गांधीजी द्वारा 'आदर्श राज्य' के आदर्श के प्रति अपनी प्रतिबद्धता व्यक्त की थी

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

drishti | दृष्टि The Vision

और वर्तमान में तृतीयक स्तर पर राजनीतिक विकेन्द्रीकरण की पैरामेट्रिक नीति के माध्यम से यथार्थ व आदर्श के बीच की दूरी को कम किया जा रहा है। वर्तमान भारत में जिला का पुट्टास्वामी वाद तथा आधार आधार वाद में पैरामेट्रिक निर्णय के माध्यम से मानवीय स्वतंत्रता के आदर्श के प्रति प्रतिबद्धता को व्यक्त किया गया।

प्रशासनिक क्षेत्र का आदर्श यह है कि सुशासन व नैतिक शासन की स्थापना हो। गांधीजी के अनुसार सभी लोगों द्वारा राष्ट्र निर्माण में अपनी भागीदारी मानी जानी चाहिए। इस तरह भारत द्वारा आरटीआई, सिटिजन चार्टर व अन्य पैरामीटिक कार्यों के माध्यम से आदर्श की ही अभिपुष्टि की है। इन कार्यों के माध्यम से यथार्थ को आदर्शवाद के समीप लाया जा रहा है तथा भारत नैतिक शासन की स्थापना की तरफ अग्रसर हो रहा है। प्रशासनिक क्षेत्र में भी पैरामीटिक दृष्टिकोण आदर्श की पुष्टि करता हुआ दिखाई दे रहा है।

आर्थिक क्षेत्र में विचार करे तो हमारा आदर्श इक्विटीशिप, संसाधनों का समान वितरण व

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

drishti | दृष्टि The Vision

सामूहिक स्वामित्व का आदर्श है। हमारा विचार है कि विश्व के संसाधनों पर कमजोर वर्गों का पहले अधिकार होना चाहिए। जैन धर्म, बौद्ध धर्म व गांधीजी द्वारा अपने अपरिग्रह के माध्यम से इसी प्रकार के विचारों को अभिव्यक्त किया था। वर्तमान में संयुक्त राष्ट्र संघ द्वारा अपने विभिन्न अभिकरणों व संस्थाओं के माध्यम से वैश्विक सहयोग तथा सामूहिक विकास पर बल दिया जा रहा है। सतत विकास लक्ष्य भी गरीबी निवारण व भूखमरी में कमी के माध्यम से जैनेटिक दृष्टिकोण से आदर्श को फलीभूत कर रहे हैं।

भारत की आर्थिक नीतियाँ भी सहयोग की बात करती है। पंचवर्षीय योजनाओं का लक्ष्य सामाजिक - आर्थिक विषमता में कमी पर ही आधारित था। इसी कारण स्वतंत्रता पश्चात से ही भारत में गरीबी में लगातार कमी आ रही है तो प्रति व्यक्ति आय में वृद्धि हो रही है। इसी तरह वर्तमान भारत की विदेश नीति भी जैनेटिक दृष्टिकोण के माध्यम से आदर्श की तरफ अग्रसर है। भारतीय विदेश नीति में शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व, परस्पर सहयोग व अनाक्रमण के पंचशीलों की

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

drishti | दृष्टि The Vision

प्रधानता है। भारतीय विदेश नीति का संचालन भी विश्व सहयोग व समन्वय के विचार के आधार पर किया जा रहा है। दूसरी तरफ भारतीय विदेश नीति में व्यापारिक तत्वों की प्रधानता के कारण राष्ट्रीय हितों को वरीयता पर रखा जाता है। भारतीय विदेश नीति पैराडाइम विचारों के कारण राज्यों की भूमिका को भी स्वीकार करती है। इस तरह सहकारी संघवाद के आदर्श को विदेश नीति में भी साधा जा रहा है।

पैराडाइम के माध्यम से आदर्श की पात्रता तय करने का विस्तार सामाजिक-सांस्कृतिक व नैतिक पक्षों के साथ-साथ पर्यावरणीय पक्षों तक भी विस्तारित है। पर्यावरणीय क्षेत्र में भारत प्रकृति के संसाधनों का उपयोग कर रहा है तो नवीकरणीय ऊर्जा व नियंत्रित उपयोग के अंतरपीढ़ी व अंतरापीढ़ी समता के लिए भी प्रयासरत है। वर्तमान में पेरिस जलवायु समझौते के माध्यम से इस आदर्श की पुष्टि की जा रही है कि "प्रकृति का संरक्षण किसी एक का नहीं बल्कि सभी लोगों का उत्तरदायित्व है।" विश्व व भारत की नीति पर्यावरणीय क्षेत्र में अनंत विकास व मानवीय अहितत्व के संरक्षण के लिए विकास के आदर्श के

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

drishti | दृष्टि The Vision

आधार पर ही कार्य कर रही है।

समाज के क्षेत्र में हम एक तरफ स्वतंत्रता को वरीयता देते हैं तो इसरी तरफ मानवीय प्रेम, परोपकार, सहयोग व समन्वय के आदर्श के प्रति भी अपना उत्तरदायित्व सुनिश्चित करते हैं। सांस्कृतिक व नैतिक मूल्यों का निरंतर विकास कर पैराडाइम दृष्टिकोण के आधार पर आदर्श के लक्ष्य को भी साधा जा रहा है। इस तरह उपरोक्त वर्णन सिद्ध करता है कि अवसर आदर्श की पुष्टि करता है।

सदा ऐसा नहीं होता कि आदर्श की पुष्टि की जाये। जब पैराडाइम दृष्टिकोण में यथार्थ प्रभावी हो जाता है तो आदर्श को नजरअंदाज कर दिया जाता है। प्राचीनकाल से लेकर वर्तमान तक कई ऐसे दृष्टांत देखे जा सकते हैं जहाँ आदर्श को छोड़ दिया गया हो। अंतर्राष्ट्रीय सहयोग के क्षेत्र में राष्ट्रीय हितों के प्रभावी हो जाने के कारण विश्व युद्ध भी सामने आये। साथ ही शीत युद्ध के कारण विश्व का विखण्डन हुआ तथा विश्व शांति के आदर्श को छोड़ दिया गया।

वर्तमान में भी अमेरिका व चीन का

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

drishti | दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

जैग्मेटिक दृष्टिकोण आदर्श को भूला रहा है। अमेरिका द्वारा "अमेरिका फर्स्ट" के कारण वीज़ा मानकों के साथ-साथ व्यापार युद्ध के कारण वैश्वीकरण के आदर्श के प्रति अपनी प्रतिबद्धता को छोड़ा जा रहा है। वर्तमान वैश्विक दशा में यथार्थवाद के अधिक प्रभावी हो जाने के कारण तात्कालिक व संकीर्ण हितों को वरीयता दी जा रही है। इसी कारण कहा जा सकता है कि अंतर्राष्ट्रीय क्षेत्र में जैग्मेटिक दृष्टिकोण आदर्श को पुष्ट नहीं कर पा रहा है।

वर्तमान में ऑक्सफेम की एक रिपोर्ट के अनुसार एक वर्ष में सृजित भारत की परिसम्पत्ति के 73% भाग पर शीर्ष 1% लोगों का अधिकार था। एक व्यक्ति इतना शक्तिशाली हो गया है कि वह इसरे को खरीद सकता है। सामूहिक व सतत विकास का लक्ष्य कई कुहरे में पीछे छोड़ दिया गया है या भूला दिया गया है। महिलाओं की आर्थिक प्रगति में संचित भागीदारी नहीं की गई। इस कारण माना जाता है कि महिला सशक्तिकरण के लक्ष्य की प्राप्ति व्यवसायवाद के माध्यम से सम्भव नहीं हो पा रही है।

व्यवसायवाद की भी यथास्थितिवाद को बढ़ावा देता है। इसी व्यवसायवाद के कारण राजनीतिक व प्रशासनिक क्षेत्र में शिथिलता का

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

drishti | दृष्टि The Vision

तत्व देखा जा सकता है। अभिजातता व विभिन्न कमियों के कारण "ग्राहक ही भगवान होने" का आदर्श (गाँधीवादी) पुष्ट नहीं हो पा रहा है। साथ ही राजनीतिक क्षेत्र में बढ़ता अपराधीकरण, लैंगिक विभेद, जाति व धर्म की प्रधानता भी बताता है कि "व्यावहारिकता आदर्श की पुष्टि नहीं करती है।" आज विश्व व भारत के स्तर पर राजनीतिक सत्ता की प्राप्ति के लिए संघर्ष प्राचीन भारत व स्वतंत्रता के आंदोलनों में सामने आये आदर्शों से अभिमुखता का प्रदर्शन कर रहे हैं।

पर्यावरणीय क्षेत्र में भी संसाधनों के विवेकपूर्ण उपयोग पर बल नहीं दिया जा रहा तथा उपभोक्तावाद के कारण पर्यावरण का अविवेकपूर्ण दोहन किया जा रहा है। इसी कारण जलवायु परिवर्तन तथा पर्यावरण से संबंधित विभिन्न समस्याएँ सामने आ रही हैं। पर्यावरण के क्षेत्र में धीमी प्रगति के कारण सतत विकास लक्ष्यों की प्राप्ति का लक्ष्य भी दूर का सपना ही दिखाई दे रहा है।

इसी तरह नैतिक, सामाजिक व सांस्कृतिक क्षेत्र में प्रैग्मेटिक पक्ष में यथार्थवाद

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

के प्रभावी होने से विभिन्न समस्याएं सामने आ रही है। ऑनर किलिंग, मॉब लींचिंग के कारण व्यक्ति की स्वतंत्रता व धार्मिक सद्भाव का लक्ष्य पूरा नहीं हो पा रहा है। वर्तमान के नैतिक मूल्य भी स्वार्थ की धारणा पर ही बल देते हैं। इस कारण नैतिक क्षेत्र में परोपकार, करुणा व दया के विचारों में निरंतर कमी आ रही है। इस तरह विभिन्न पक्षों का विचार करने पर देखा जा सकता है कि प्रैग्मेटिक दृष्टिकोण उचित है लेकिन सदैव सही नहीं होती है। यह सदैव आदर्श की तरफ ही नहीं ले जाती है।

अब आवश्यकता इस बात की है कि प्रैग्मेटिक धारणा के आधार पर आदर्शों की तरफ बढ़ा जाये। इसके लिए यह होना चाहिए कि हमारे आदर्श वैज्ञानिकता पर आधारित होकर यथार्थता के करीब होने चाहिए। हमारी व्यावहारिक धारणा को नैतिक स्वरूप से युक्त होना चाहिए जो यथार्थ के साथ-साथ आदर्शों की प्राप्ति में भी सहायक हो। व्यावहारिकता में सभी वर्गों के हितों को शामिल किया जाना चाहिए तथा असंतोष में कमी की जानी चाहिए

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

drishti | दृष्टि The Vision

ताकि आदर्श की प्राप्ति में विशेष समस्याओं का सामना न करना पड़े। मानवीय सहयोग तथा वैश्विक सहयोग के माध्यम से पैराग्मेटिक नीति में व्याप्त कमियों को दूर कर यथार्थ की तरफ उन्मुख किया जाना चाहिए। राष्ट्रीय हितों की प्राप्ति तभी सम्भव है जब विश्व में स्थायित्व हो। हमारी उपलब्धि भी नैतिक होनी चाहिए जो भावात्मक व गुणात्मक विकास के साथ-साथ गाँधीवादी नैतिकता के आदर्शों से भी युक्त हो। इन उपायों के माध्यम से विश्व के एकीकृत विकास, नैतिक विकास के आदर्श को यथार्थ बनाया जा सकता है।

निष्कर्षतः होना यह चाहिए कि आदर्शों की नैतिकता के साथ-साथ हमारे दृष्टिकोण में भी नैतिकता का समावेश हो। व्यावहारिकता व आदर्श के मध्य अंतर को व्यक्ति से लेकर विश्व के नैतिक विकास के माध्यम से पूरा किया जाना चाहिए। दृष्टिकोण की नैतिकता के लिए व्यक्ति को सदैव आदर्श का ज्ञान रहना चाहिए तथा समाज में नैतिकता का सम्मान हो तथा शिक्षा व्यवस्था को भी नैतिक बनाया जाये। हमें हम्मूराबी के सपाट कानूनों के बजाय नैतिकता

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

व आदर्श पर आधारित कानूनों की आवश्यकता है तथा इसके लिए साधन भी नैतिक होना चाहिए।

"हमें जीवन में नैतिक आदर्श की आवश्यकता है तथा इसके लिए मार्ग पर नैतिक व संकीर्ण यथार्थ के बजाय विस्तृत यथार्थ पर आधारित हो।"

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation